

**ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक लगता है,
परन्तु उसका अन्त मृत्यु की ओर ले जाता हैनीतिवचन 16:25 – एक कहावत की कहानीटेड
हिल्डेब्रांट और चैटग्ट द्वारा**

दांतेदार पहाड़ों और प्राचीन जंगलों के बीच बसे एक शांत राज्य में, जेम्स द वैलिंट नाम का एक युवा योद्धा रहता था। बहादुर और दृढ़ निश्चयी, जेम्स ने अपना नाम लोककथाओं और किंवदंतियों के पन्नों में दर्ज कराने की कोशिश की। उनके पिता, एक विनम्र लोहार, ने हमेशा उन्हें चेतावनी दी थी, "बुद्धि ताकत से बेहतर है, मेरे बेटे। एक रास्ता है जो सही लगता है, लेकिन इसका अंत केवल बर्बादी की ओर ले जाता है।"

लेकिन जेम्स हठी और अहंकारी था, वह व्यक्तिगत प्रसिद्धि चाहता था।

एक ठंडी सुबह, पूरे शहर में यह खबर फैल गई कि एक भयानक जानवर ने पास की घाटी पर हमला कर दिया है। यह फसलें खा गया और यात्रियों को डराने लगा। राजा ने वादा किया कि जो कोई भी राक्षस को मार देगा, उसे धन और सम्मान दिया जाएगा। जेम्स को अपना मौका दिख गया।

चेतावनियों और सलाह के साथ-साथ अपनी माँ की विनती को नज़रअंदाज़ करते हुए, जेम्स ने अपनी तलवार उठाई और अकेले ही चल पड़ा। उसका दिल आत्मविश्वास से जल रहा था। छायादार रास्ते पर हर कदम उसे निश्चित लग रहा था, मानो नियति ही उसे आगे खींच रही हो।

रास्ते में जेम्स को सड़क के किनारे बैठा एक बूढ़ा साधु मिला। उसकी धुंधली और दूर की आँखें उसके शरीर के आर-पार उसकी आत्मा को देख रही थीं। "वापस लौट जाओ, बेटा," बूढ़े ने सलाह दी। "बहुत से लोग इस रास्ते से गुज़रे हैं, अपनी ताकत पर भरोसा करते हुए। कोई भी वापस नहीं लौटा।"

जेम्स ने उपहास किया। "मैं उनके जैसा नहीं हूँ। मैं उनसे ज़्यादा मज़बूत, समझदार और बेहतर तरीके से तैयार हूँ।"

साधु ने आह भरते हुए उसे पुरानी कहावत याद दिलाई, "ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को सही लगता है, लेकिन उसका अंत मृत्यु का मार्ग होता है।"

जेम्स ने उसकी सलाह को नज़रअंदाज़ कर दिया और उसे पीछे छोड़ दिया। विजयी भाव से वह आगे बढ़ता रहा।

घाटी की गहराई में, जेम्स को आखिरकार वह जानवर मिल गया - एक नदी जितना लंबा सांप, जिसके तराजू काले कांच की तरह चमक रहे थे। वह बर्फ के टूटने जैसी आवाज में बोला। "क्या तुम मौत चाहते हो, युवा योद्धा?"

जेम्स ने अपनी चमकती हुई तलवार से हमला किया। लड़ाई भयंकर थी। उसके वार तेज़ थे, लेकिन साँप की खाल ने उसके वार को पीछे धकेल दिया। घंटों बीत गए। घायल, थके हुए और घिरे हुए जेम्स को बहुत देर से एहसास हुआ कि अकेले ताकत से इस चालाक प्राणी को नहीं हराया जा सकता।

साँप की आँखें चमक उठीं। "तुमने वही रास्ता चुना जो तुम्हें सही लगा," वह फुफकारता हुआ बोला। "लेकिन तुमने दी गई सारी बुद्धिमानी भरी सलाह को नज़रअंदाज़ कर दिया।" आखिरी फुफकार के साथ उसने जेम्स के दिल में अपने नुकीले दाँत गड़ा दिए।

कुछ दिनों बाद, बूढ़ा साधु घाटी में भटकता हुआ आया। टूटी हुई तलवार और बेजान योद्धा का शव देखकर वह घुटनों के बल झुक गया और उसे श्रद्धांजलि दी।

"बहुत से लोग इस रास्ते पर चलते हैं," उसने खुद से फुसफुसाया। "वे सभी अपने उद्देश्य के प्रति निश्चित हैं, लेकिन अपने लक्ष्य के प्रति अंधे हैं।"

उन्होंने जेम्स के पास एक स्मारक पत्थर छोड़ा, जिस पर ज्ञान के शब्द खुदे हुए थे: "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसका अन्त मृत्यु की ओर ले जाता है।" *नीतिवचन 16:25*

पूरे राज्य में हर गांव के चौराहे पर जेम्स की कहानी सुनाई जाती थी - वीरता की कहानी के रूप में नहीं, बल्कि एक गंभीर सावधानी और बुद्धिमानी भरी चेतावनी के रूप में।